ग्रन्थमाला ‘स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन’ : खण्ड ६

स्वभावदोष एवं अहं की विविध अभिव्यक्तियोंका विश्लेषण

हिन्दी (Hindi)

ग्रन्थ-निर्मितिसम्बन्धी मार्गदर्शक

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

संकलनकर्त्री

श्रीमती सुप्रिया सुरजीत माथुर

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

मार्च २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख ३१ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थ–निर्मिति सम्बन्धी मार्गदर्शक सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीके अद्वितीय कार्यका संक्षिप्त परिचय

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

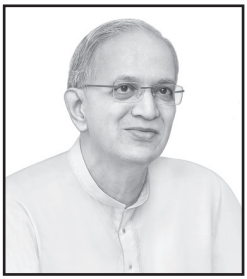

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे २०.३.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५३ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ–निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक–सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ।।
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ।। – जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९८

ग्रन्थकी संकलनकर्त्रियोंका परिचय

श्रीमती सुप्रिया सुरजित माथुर

आप रामनाथी (गोवा) स्थित आश्रममें रसोई विभागमें पूर्णकाल सेवा करती हैं । वर्ष २०१४ से आप 'स्वभावदोष और अहं निर्मूलन प्रक्रिया' करनेके लिए पूरे भारतसे आनेवाले साधकोंका मार्गदर्शन कर रही हैं । जिससे साधक उचित प्रयत्न कर रहे हैं ।

कु. मधुरा भिकाजी भोसले

आप इस पृथ्वीपर अन्यत्र अनुपलब्ध अध्यात्मके विविध विषयोंपर गहन शास्त्रीय ज्ञान सूक्ष्मसे प्राप्त करती हैं । आप धार्मिक विधि, यज्ञयाग आदि का सूक्ष्म-परीक्षण भी करती हैं । दिसम्बर २०१८ में आपने ६१ प्रतिशत आध्यात्मिक स्तर प्राप्त किया है।

अनुक्रमणिका

卐 स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलनकी प्रक्रिया सीखकर जीवनको आनन्दमय बनाइए ! ८

卐 श्रीमती सुप्रिया माथुरकी सीखनेकी वृत्ति एवं कृतज्ञभाव ! १०

१. स्वभावदोष उत्पन्न होनेके कुछ कारण १२

२. साधनामें आनेवाली बाधाएं १३

३. विविध स्वभावदोषोंका विश्लेषण १६

४. स्वभावदोषोंके पीछे अहं छिपा होना ३०

५. स्वभावदोषोंसे होनेवाली हानि ३०

६. अहं ३१

७. चूक होना एवं स्वीकारना ४८

८. सनातनके आश्रममें सम्पन्न 'युवा साधना शिविर'में सम्मिलित साधिकाके 'स्वभावदोष-निर्मूलन'के विषयमें विचार ५६

९. 'नामजप, सत्संग, सत्सेवा इत्यादि साधना करनेसे होनेवाले स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलनकी अपेक्षा साधनाके साथ 'स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन प्रक्रिया' करनेपर स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलन अधिक मात्रामें होता है', यह दर्शानेवाला 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'द्वारा किया सर्वेक्षण (सर्वे) ५६

१०. 'स्वभावदोष और अहं निर्मूलन प्रक्रिया'से साधकोंको हुए लाभ दर्शानेवाला 'महर्षि अध्यात्म विश्वविद्यालय'द्वारा 'यूएएस (यूनिवर्सल ऑरा स्कैनर)' उपकरणसे किया वैज्ञानिक परीक्षण ६१

सनातनके ग्रन्थोंमें उपयोग की गई संस्कृतनिष्ठ हिन्दी भाषाकी कारणमीमांसा

१. सनातनके ग्रन्थोंमें शुद्ध (संस्कृतनिष्ठ) हिन्दीका उपयोग किया जाता है। पाठकोंकी सुविधाके लिए कठिन शब्दोंके आगे कोष्ठकमें वैकल्पिक अन्य भाषाके शब्दका उल्लेख किया जाता है।

२. हिन्दी राष्ट्रभाषा होनेके कारण विविध प्रान्तोंमें एक ही अर्थमें एक से अधिक शब्द प्रचलित होते हैं। अनेक बार शब्दकी वर्तनीमें अंतर होता है। इन कारणोंसे पाठकोंको भाषा कठिन अथवा अशुद्ध प्रतीत न हो, इस हेतु ग्रन्थमें विभिन्न स्थानोंपर हमने कोष्ठकमें वैकल्पिक शब्द देनेका प्रयास किया है; तथापि पृष्ठसंख्या बढनेके भयसे प्रत्येक बार ऐसा करना सम्भव नहीं।

– (सच्चिदानंद परब्रह्म) डॉ. जयंत आठवले

स्वभावदोष एवं अहं निर्मूलनकी प्रक्रिया सीखकर जीवनको आनन्दमय बनाइए !

'स्वभावदोष और अहं ईश्वरप्राप्तिकी साधनामें दो बडी बाधाएं हैं । इनके कारण व्यक्तिगत जीवन दुःखी होता है और व्यक्तित्वका विकास भी रुक जाता है । स्वभावदोष और अहं के निर्मूलनकी प्रक्रिया करनेके लिए अनेक साधक भारतके अनेक राज्योंसे सनातनके रामनाथी, गोवा स्थित आश्रममें आते हैं । आश्रमकी पाकशाला इस प्रक्रियाका केन्द्र है; क्योंकि रसोई विभागकी पूज्य रेखा काणकोणकर और श्रीमती सुप्रिया माथुर साधकोंको प्रक्रिया समझाती हैं तथा पाकशालामें सेवाके माध्यमसे साधक प्रक्रियाका प्रायोगिक भाग भी सीख पाते हैं । परिणामस्वरूप सैकडों साधक कुछ महीनोंमें ही उचित साधना करने लगते हैं ।

पूज्य रेखा काणकोणकर और श्रीमती सुप्रिया माथुर साधकोंको सत्संगमें प्रक्रियाके विषयमें क्या बताती हैं, वे साधकोंसे प्रक्रिया कैसे करवाती हैं, इस विषयमें अनेक साधकोंकी जिज्ञासा रहती है । वर्ष २०१६ के मार्च, अप्रैल और मई महीनेमें सनातनकी ज्ञानप्राप्तकर्त्री साधिका कुमारी मधुरा भोसले को श्रीमती सुप्रिया माथुरके ऐसे सत्संगोंमें उपस्थित रहनेका अवसर मिला । श्रीमती सुप्रिया माथुरके मार्गदर्शनको कु. मधुरा भोसलेने इस ग्रन्थमें बहुत सुन्दर ढंगसे संकलित किया है । इससे सभी साधकोंको स्वभावदोष और अहं निर्मूलन प्रक्रियाकी दिशा मिलेगी । अनेक साधकोंकी यह प्रक्रिया सीखनेकी तीव्र इच्छा रहती है; किन्तु कुछ बाधाओंके कारण वे रामनाथी आश्रममें आकर यह प्रक्रिया नहीं सीख पाते । उनके लिए यह ग्रन्थ निश्चित ही बहुत उपयोगी होगा । केवल अनेक वर्षोंसे साधना करनेवालोंके लिए ही नहीं; अपितु जिज्ञासु और नए साधकोंके लिए भी यह ग्रन्थ, जीवनमें आनन्दप्राप्तिका मार्ग दिखानेवाला दीपस्तम्भ सिद्ध होगा ।